गद्य (स्त्री)

पद्मिनी– (अपने स्थान पर बैठे–बैठे ऊबकर) कहाँ गए दोनों? यह कपिल भी गायब हो गया। अभी तक उन्हीं को ढूढ़ँ रहा होगा? नहीं, यह सम्भव नहीं। वे तो इतने कमजोर हैं–ज्यादा दूर नही गये होगें। कपिल ने अब तक तो ढूढ़ँ ही लिया होगा। पता नहीं, इतनी देर तक दोनों कहाँ बैठे होंगे! होंगे कहीं गप्पें मारते। स्त्री का जंजाल छूटा, पुराना मित्र अकेले में मिला–तो बस, घन्टों बाते किया करो–या सचमुच रूठे हों और अब कपिल को सामने बिठाकर अपनी चुप्पी से कपिल को सता रहे हो! पहले से ही माथा गरम था। (विराम) अभी तक कोई नही आया! अधेंरा हो रहा है। कैसे निर्लज्ज हैं दोनों! मुझ अकेली को यहाँ छोड़ गए। रत्ती–भर भी मेरी परवाह नहीं। नहीं, यहाँ रहने में कोई लाभ नहीं। चलूँ, खुद ही उन दोनों को ढूढ़ूँ। मुझे रास्ते में साँप काट ले तो उन्हें तो अच्छा ही है। बला टली!

कितना घुप्प अँधेरा है यहाँ! कुछ नहीं दिखाई देता। (आवाज देकर) कपिल, कपिल! लगता है, वे भी यहाँ नहीं है। मैं क्या करूँ अब? इतनी रात गए! अकेली! (खटका सुनाई पड़ता है) मैया री! कौन है? सियार–शायद यही बाहर चक्कर लगा रहा होगा। अगर कहीं भीतर आ गया तो? हाय राम–जान बची! चला गया। माँ काली, तू ही मेरी रक्षा कर! तेरी ही शरण में, माँ! (शरीरों से टकराती है। चौंककर) क्या है? यह क्या है?

हाय भगवान! यह क्या हुआ? दोनों के दोनों! दोनों चल दिये। मरने से पहले मुझे याद तक नहीं किया! अब मैं क्या करूँ? हाय देवदत्त, मैंने ऐसा कौन–सा अपराध किया कि ऐसी हालत में मुझे अकेली छोड़ गए? मुझ पर तुम्हार इतना ही प्यार था? और, कपिल तुम भी? कुत्ते की तरह गिड़गिड़ाती आँखों से मुझे देखते थे। तुमने भी मेरा विचार नहीं किया? कितने स्वार्थी हो तुम दोनों? निर्दयी! माँ दुर्गा, अब तू ही राह बता। अब तेरे सिवाय कौन है मेरा? कहाँ जाऊँ? क्या करूँ? अपने घर जाऊँ? पर कैसे? (विराम) घर! घर जाकर भी क्या करूँगी? कौन–सा मुँह लेकर जाऊँगी? क्या कहूँगी? क्या समाचार दूँगी? कौन मेरा भरोसा करेगा? लोग तो कहेगे, इस कलमुँही के पीछे दोनों लड़ मरे। हाँ, यही कहेंगे–कहेंगे ही। तो फिर मेरा क्या होगा? (यह सोचते ही शरीर थरथरा जाता हैं) नहीं, माँ! नही! कपिल चला गया, देवदत्त चला गया–अब मैं भी उनके साथ ही चलूँ। (तलवार उठाती हैं) अपना सिर कट लेने की शक्ति भी मुझमें नहीं है, लेकिन माँ, तुझे क्या–कोई कैसे भी मरे? तुझे तो एक और बलि चाहिए। ले, स्वीकार कर तीसरी बलि!

नाटक–हयवदन
नाटककार–गिरीश कारनाड

अनामिका

गद्य (स्त्री)

जूलियट विदा! भगवान जानता है हम फिर मिलेंगे। मेरी धमनियों में एक धुँधला ठण्डा भय स्फुरित हो रहा है, लगता है जैसे जीवनी–शक्ति की सारी ऊष्मा को वह बर्फ की तरह जड़ीभूत किए दे रहा है। मैं उन्हें अपने पास फिर बुला लूँ कि वे मुझे साहस बँधा सकें, धाय.... लेकिन वह यहाँ क्या करेगी? अपना यह भयानक काण्ड मुझे एकान्त में ही करना चाहिए। आह! विष! कहीं इसने कोई भी असर न किया तो? तो क्या कल प्रातःकाल मेरा विवाह हो जाएगा? नहीं, नहीं, यह उसे रोक देगा। पड़ा रह यहीं। और यदि यह विष ही हो जो पादरी ने मुझे चुपचाप मार डालने को दिया हो कि कहीं वह विवाह कलंकित न हो जाए, जो स्वंय उसी ने रोमियों और मेरा संबंध जोड़कर कराया है? मुझे यही डर है। पर फिर भी मैं सोचती हूँ, यह नहीं हो सकता, क्योंकि वह तो एक पवित्र व्यक्ति है, कौन नहीं जानता। और जो कहीं कब्र में लिटाई जाने पर मैं रोमियों के छुड़ाने आने के पहले जाग गई तो? यह एक भयानक बात है। तो क्या मैं उस कब्र में तब घुट नहीं जाऊँगी? वहां स्वच्छ वायु तो पहुचतीं ही नहीं। कहीं अपने रोमियों के आने के पहले ही मैं घुटकर मर गई तो? यदि मैं जीवित भी रही, क्या ऐसा तो न होगा कि मृत्यु और रात के भीषण अंधकार में, उस डरावनी जगह में, कब्र जैसी जगह में पुरानी कब्र, जहाँ से सैकड़ों बरसों से मेरे पूर्वजों की हड्डियाँ गड़ी हैं, भरी हुई हैं, जहाँ खूनी टाइवॉल्ट अभी धरती में ताज़ा पड़ा है, कफन सड़ता हुआ, जहाँ लोग कहते है, रात के किसी पहर में आत्माएँ डोलती हैं... मैं रह सकूँगी? उफ, उफ! कहीं जल्दी भाग गई मैं!! तो उस दुर्गंध और चीत्कारों से ऐसी न हो जाऊँ, जैसे धरती से मैण्ड्रेक उखाड़ने पर हो जाए कोई, कि जीवित–मर्त्य उसे पागल–सा भागते देखें! जाग गई मैं! तो इन विकराल वस्तुओं को देखकर पागल न हो उठूँगी मैं! क्या मैं पागल की तरह पूर्वजों की हड्डियों से खेलूँगी? कटे हुए टाइबॉल्ट को उसके कफ़न से निकाल लूँगी और उसी क्रोध में, किसी महान पूर्वज की हड्डी को डण्डे की तरह चलाकर अपना सिर फोड़ लूँगी, अपना अशक्त मस्तिष्क नष्ट कर लूँगी? उफ! देखो! देखो! मुझे लगता है टाइबॉल्ट का प्रेत रोमियों को ढूँढ़ रहा है, जिसने तलवार की नोक पर उसका भारीर उठाकर फेंक दिया था! टाइबॉल्ट! ठहर जाओ! रोमियो! मैं आ रही हूँ। यह मैं तेरे लिए पीती हूँ।

नाटक– रोमियो जूलियट
नाटककार– विलियम शेक्सपीयर
अनुवाद– रांगेय राघव